विपश्यना

साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-
आजीवन शुल्क रु. ५००/-

बुद्धवर्ष 2562, मार्गशीर्ष पूर्णिमा, 22 दिसंबर, 2018, वर्ष 48, अंक 6

For online Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

चतुन्नं, भिक्खवे, अरियसच्चानं अननुबोधा अप्पटिवेधा- एवमिदं दीघमद्धानं सन्धावितं संसरितं ममञ्चेव तुम्हाकञ्च।

महावग्गपालि-महापरिनिब्बानसुत्तं-155.

-- भिक्षुओ, चार आर्य-सत्यों को भली प्रकार न जान लेने के कारण और गहराई से बींध कर अपने अनुभवों के स्तर पर उनका स्वयं साक्षात्कार न कर लेने के कारण ही इतने लंबे समय से मेरा और तुम्हारा इस संसारचक्र में बार-बार आना-जाना और भागना-दौड़ना होता रहा है।

वि. साधना एवं धर्म-प्रसार की स्वर्ण जयंती पर पूज्य गुरुजी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन का सुअवसर

विपश्यना साधना के पुनरुत्थान की 50वीं वर्षगांठ, यानी, 3 जुलाई 2018 से 2 जुलाई 2019 तक वर्ष भर ग्लोबल विपश्यना पगोडा में प्रतिदिन एक दिवसीय शिविर नियमित रूप से चलते रहेंगे, ताकि यह वर्ष साधकों को दैनिक साधना पुष्ट करने में सहायक हो। यानी, जिस साधक-साधिका को जिस दिन भी समय मिले, इन शिविरों का लाभ उठा सकते हैं। इससे साधकों की साधना में निरंतरता और नियमितता आयेगी और उनसे प्रेरणा पाकर अधिक से अधिक लोगों में सद्धर्म के प्रति जागरूकता पैदा होगी और वे भी शिविरों में सम्मिलित होकर अपना कल्याण साध सकेंगे। अन्य स्थानों पर भी लोग इसी प्रकार दैनिक साधना, सामूहिक साधना तथा एक दिवसीय शिविरों द्वारा इसके व्यावहारिक अभ्यास को पुष्ट करें, यही पूज्य गुरुदेव के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि और सही कृतज्ञता होगी।

विश्व विपश्यनाचार्य पूज्य श्री सत्यनारायण गोयन्काजी के शुद्ध धर्म के संपर्क में आने के पूर्व की इन घटनाओं से और बचपन से युवावस्था तक के उनके भक्तिभाव से कोई भ्रम नहीं पैदा हो, बल्कि यह प्रेरणा मिले कि ऐसा व्यक्ति भी किस प्रकार बदल सकता है, इसी उद्देश्य से उनके संक्षिप्त **जीवन-परिचय** की यह **चौथी कड़ी**:–

आर्य समाज से संपर्क

क्रमशः (पिछले अंक से आगे) ... चौदह वर्ष की उम्र होते-होते मैं आर्य समाज के संपर्क में आया। आर्य समाज का एक नया मंदिर हमारे घर के बिल्कुल समीप ही बना था। उसके पुरोहित थे पं. मंगलदेवजी शास्त्री, जो भारत से अभी नये ही आये थे। उम्र साठ से ऊपर नहीं लगती थी परंतु सिर के सारे बाल सफेद थे, मुँह में दांत एक भी नहीं था। इस अवस्था में भी उनका गठीला शरीर और तेजस्वी चेहरा अत्यंत आकर्षक लगता था। उनका अत्यंत स्नेहिल स्वभाव, विषय को बहुत सरल शब्दों में समझाने की कला और वैदिक साहित्य का गंभीर अध्ययन-- उनकी इन विशेषताओं ने मुझे मांडले के आर्य समाज से जोड़ा जो मेरी अठारह वर्ष की उम्र तक यानी जापानी महायुद्ध आरंभ होने पर म्यंमा छोड़ने तक बना ही रहा।

उन्होंने मांडले के स्थानीय किशोरों और नवयुवकों में एक नयी चेतना जगायी, "आर्य-बाल-सेना" का गठन किया जिसके नेतृत्व का भार मुझे दिया गया। हम हर रविवार को एकत्र होते, बौद्धिक चर्चाएं होतीं और शास्त्रीजी के निर्देशन में आसन, प्राणायाम सीखते, लाठी और गतका चलाना सीखते। यह सब बहुत अच्छा लगता। इसके अतिरिक्त वे आर्य समाज के सिद्धांतों को बड़े प्यार से समझाते। मैं प्रखर बुद्धिशाली महर्षि दयानंदजी सरस्वती के विचारों से बहुत प्रभावित हुआ। यद्यपि उनकी शिक्षा के अनुसार निर्गुण-निराकार का उपासक नहीं बन सका क्योंकि सगुण साकार के प्रति मेरी भक्ति अत्यंत प्रगाढ़ और सुदृढ़ हो चुकी थी। उसे छोड़ना मेरे लिए असंभव था। इसके अतिरिक्त जब आर्य समाज में "जय जगदीश हरे" की आरती गायी जाती तो उसके यह बोल सुनता--

"करुणा हस्त उठाओ, शरण पड़ा तेरे।..."

1. पूज्य गुरुजी की बहन, 2. पूज्य श्री गोयन्काजी, 3. गुरुजी की ताई मांजी, 4. पूज्य माताजी और इनके पीछे खड़े हुए सभी छह पुत्रगण

मुझे लगता, इसमें तो ईश्वर का साकार रूप है ही, अन्यथा वे अपने हाथ कैसे उठायें और सगुण रूप भी हैं, अन्यथा शरण आये हुए के लिए उनमें करुणा कैसे जागे? परंतु मैं इन प्रश्नों को लेकर अपने आर्य समाजी गुरु पं. मंगलदेवजी शास्त्री से प्रश्न करने की धृष्टता नहीं कर सकता था। केवल मन में यह निश्चय बना रहा कि भक्ति तो सगुण साकार की ही होगी, निर्गुण निराकार का चिंतन-मनन भले ही कर लें। आर्य समाज में जब साप्ताहिक हवन होता तो उस अग्नि के सुगंधित धूम्र से प्रार्थना कक्ष का सारा वायुमंडल सुरभित हो उठता और मुझे यह बहुत प्रिय लगता। यद्यपि अधिकांश वैदिक मंत्रों के अर्थ नहीं समझ पाने के कारण उनके प्रति बहुत आकर्षित नहीं हो सका, परंतु समापन पर जो "शांतिपाठ" होता, वह समझ में आता और मन को बहुत प्रिय भी लगता। यदा-कदा घर में भी मैं इस शांतिपाठ का उच्चारण करके मन को प्रमुदित-प्रफुल्लित कर लेता।

अपने आर्य समाजी गुरुदेव के संपर्क में आने पर एक बड़ी उपलब्धि यह हुई कि किसी भी बात को अंधविश्वास से न मान कर उस पर चिंतन-मनन करने का मेरे लिए एक नया आयाम खुला। यह भी समझ में आया कि "शास्त्र-वचन-प्रमाण" की अंधमान्यता का लेप लगाती हुई जो बहुत-सी पौराणिक पुस्तकें लिखी गयी हैं उन्हें अंध-श्रद्धा से स्वीकार नहीं कर लेना चाहिए। यह जान कर बहुत आश्चर्य हुआ कि कुछ लोगों ने बहुत से धर्म-ग्रंथों की रचना इस चतुराई से की जिससे कि ये ग्रंथ सर्वमान्य हों और उनका स्वार्थ सिद्ध हो।

मेरे लिए यह भी बिल्कुल नयी जानकारी थी कि हमारे धर्मग्रंथों में समय-समय पर क्षेपक के रूप में बहुत कुछ जोड़ा जाता रहा जो कि असत्य है, अत: भ्रामक है और स्वीकारने योग्य नहीं है।

आर्य समाज की समाज-सुधारक शिक्षा ने मेरे मन पर बहुत गहरा प्रभाव डाला। चौदह से अठारह वर्ष की उम्र के बीच अपने किशोर और नवयुवक संगी-साथियों के साथ मैंने समाज में बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह तथा अनमेल विवाह को रोकने के असफल प्रयत्न किये। इसी प्रकार एक विधवा-विवाह कराने का

प्रयत्न भी असफल रहा। यों ही शुद्धिकरण और शूद्र को यज्ञोपवीत दिलाने का जोश भी सफलीभूत न हो सका। परंतु फिर भी समाज सुधार के प्रति जो सुदृढ़ भावना जागी, वह भविष्य के जीवन में खूब काम आती रही।

मैंने महर्षि दयानंदजी सरस्वती की प्रमुख रचना "सत्यार्थ-प्रकाश" भी पढ़ी जिससे चिंतन-मनन के कई नये आयाम खुले। उस किशोर अवस्था में उसे पूरी तरह समझ पाया, यह तो नहीं कह सकता लेकिन जहां बुद्ध की शिक्षा का वर्णन आया वहां यह जाना कि उसमें अनेक त्रुटियां हैं। बुद्ध ने आत्मा और परमात्मा के अस्तित्व को अस्वीकार करके लोगों को नास्तिक बनाया। उन्होंने वेदों की निंदा की। इससे यह समझ में आया कि शायद इसी कारण उनके मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति सद्गति से वंचित रह कर अधोगति प्राप्त करता है। "सत्यार्थ-प्रकाश" में बुद्ध की शिक्षा में और भी बहुत-सी त्रुटियां बतायी गयीं जिन्हें मैं उस समय पूरी तरह समझने योग्य नहीं था। परंतु इतना अवश्य स्पष्ट हुआ कि बुद्ध की शिक्षा निश्चित रूप से दोषपूर्ण है। इससे मेरे मानस पर मेरे बहनोई के पूर्व कथन का जो प्रभाव था, वह पुष्ट से पुष्टतर होता चला गया।

1942 में युद्ध आरंभ होने पर म्यंमा छोड़ कर जब भारत आया तब युवावस्था की ओर बढ़ता हुआ बुद्ध की शिक्षा में अन्य अनेक खामियां देखने लगा, जैसे कि वे अत्यंत दु:खवादी थे जिसके कारण देश में निराशा और निरुत्साह का वातावरण पैदा हुआ। उनकी शिक्षा में सारा महत्त्व संसार की क्षणभंगुरता को ही दिया गया है। इस अनित्य दर्शन में नित्य, शाश्वत, ध्रुव का कहीं जिक्र तक नहीं किया गया। अत: इस संसारचक्र से बाहर निकलने का न कोई लक्ष्य, न मार्गदर्शन। उनकी सारी शिक्षा नकारात्मक ही नकारात्मक है। कहीं कोई सकारात्मक उपदेश नहीं जिससे मनुष्य अपने उज्ज्वल भविष्य के प्रति आशावान हो सके।

वे विरक्तिवादी थे, अत: उनकी शिक्षा गृहत्यागियों के लिए भले उचित हो, परंतु गृहस्थों के लिए सर्वथा अनुपयोगी है। वे करुणा के सागर थे, अत: पूर्ण अहिंसा के प्रशिक्षक होने के कारण उनकी शिक्षा ने हमारे देश को दुर्बल बनाया। अशोक जैसे संग्रामवीर ने बुद्ध की शिक्षा के फेर में पड़ कर अपनी तलवार तोड़ दी। वह युद्ध से विमुख हो गया। इसका दूरगामी दुष्प्रभाव पड़ा। देश पर बार-बार बाहरी हमले होते रहे और हम बार-बार गुलामी की जंजीरों में जकड़े जाते रहे। बुद्ध की शिक्षा के कारण ही लोगों में सरसता का भाव नष्ट हो गया, जीवन बड़ा नीरस और निस्सार लगने लगा। सर्वत्र शून्य ही शून्य। जीवन के प्रति लोगों में कोई उल्लास, उमंग, उत्साह नहीं रह गया। यह देश के लिए बहुत हानिकारक सिद्ध हुआ। उन दिनों इन जैसी अन्य अनेक बातें सुनता-पढ़ता रहा और मन पर उनका गहरा प्रभाव पड़ता रहा। यों बुद्ध की शिक्षा के प्रति मन में विकर्षण का भाव प्रबल होता गया।

इसके साथ-साथ अपनी पैतृक वैदिक-परंपरा के प्रति गहरा सम्मान और अटूट श्रद्धा होने के कारण एक यह विचार भी मन में गहराई से बैठ गया कि भगवान बुद्ध की वाणी में अनेक खामियां होते हुए भी उसमें कई अच्छी बातें अवश्य होंगी तभी उन्हें विश्व में इतना सम्मान मिला। परंतु ये अच्छी बातें हमारी वैदिक परंपरा से ही ली गयी हैं। अहिंसा और त्याग को अत्यधिक महत्त्व देने और हमारे तत्कालीन समाज में जो थोड़ी-बहुत गलतियां आ गयी थीं, उन्हें दूर करने के अतिरिक्त उन्होंने ऐसी कोई अन्य शिक्षा नहीं दी जो हमारे लिए नयी थी।

मुझे याद है कि रंगून रहते हुए लगभग पच्चीस वर्ष की युवावस्था में जीवन के अनेक क्षेत्रों में प्रभूत सफलता प्राप्त करने के कारण और अपने मिलनसार स्वभाव के कारण मैं वहां के शीर्षस्थ धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक और राजनैतिक नेताओं के निकट संपर्क में आया और अनेकों से अत्यंत घनिष्ठता भी हुई। कभी-कभी उनसे वार्तालाप करते हुए अपनी नासमझी के कारण मैं ऐसे विचार प्रकट कर दिया करता था जो नम्रतापूर्वक कहे जाने पर भी उनके मन को चोट पहुँचाते थे। मैं अपनी समझ के अनुसार उनके घावों को सहलाता, उनसे प्यार भरे दो शब्द कहता। परंतु मन ही मन यही समझते रहता कि इन्हें हमारी वैदिक परंपरा का ज्ञान नहीं है, इसीलिए मेरी बातों से विचलित हुए हैं। वस्तुत: तो वेदों में सारे विश्व का ज्ञान भरा पड़ा है। जब कभी, जहां कहीं, जिस किसी ने कोई ज्ञान की बात कही हो, उसका उद्गम तो वेदों में ही पाया जाता है। यद्यपि उस समय तक मैंने किसी भी वेद का एक पृष्ठ भी नहीं पढ़ा था। सारी मान्यता सुनी-सुनायी बातों पर आधारित थी।

उन दिनों एक घटना ऐसी घटी कि स्थानीय अंग्रेजी पत्रों में यह सूचना प्रकाशित हो गयी कि "क्विंटेसेंस ऑफ हिंदुइज्म" पर मेरा प्रवचन होगा। मेरे सभी सार्वजनीन प्रवचन जो अधिकतर साहित्य, संस्कृति और धर्म पर हुआ करते थे, सदा हिंदी में होते थे। मेरा अंग्रेजी का ज्ञान सीमित था। अत: मेरे अनेक बरमी मित्र जो हिंदी नहीं जानते थे, वे इन प्रवचनों का कोई लाभ नहीं उठा सकते थे। परंतु जब किसी ने यह सूचना अंग्रेजी के पत्रों में छपवायी तो यह लिखना भूल गया कि प्रवचन हिंदी में होगा। इससे यह भ्रांति फैली कि मेरा यह प्रवचन अंग्रेजी में होगा। मेरे तीन या चार घनिष्ठ बरमी मित्र मुझे सुनने के लिए उपस्थित हुए। उनमें से ऊ ता म्या को छोड़ कर अन्य हिंदी नहीं समझते थे। परंतु मुझे तो हिंदी में बोलना था, अत: हिंदी में ही बोला। जो हिंदी नहीं समझते थे उन्हें बड़ी निराशा हुई।

प्रवचन के बाद मैं उन चारों को अपने घर ले गया ताकि भोजन के साथ-साथ उन्हें अपने हिंदी प्रवचन का सारांश बता सकूं। मैंने समझाया कि हिंदू धर्म का सार गीता है और गीता का सार स्थितप्रज्ञता की शिक्षा में है। मैंने अपने प्रवचन में स्थितप्रज्ञता का जो विश्लेषणात्मक वर्णन किया, वह भी उन्हें बताया। इस पर ऊ ता म्या ने कहा कि ये सब भगवान बुद्ध द्वारा वर्णित अरहंत के गुण हैं। इस पर मैं गर्व से बोल उठा कि आखिर भगवान बुद्ध ने जो कुछ कहा, वह हमारे वेदों से, या हमारी गीता से ही तो लेकर कहा। अत: इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि उन्होंने अरहंत के जो गुण बताये, वे गीता के स्थितप्रज्ञ के गुणों के अनुकूल थे। यह बात मेरे बरमी मित्रों को अच्छी नहीं लगी। ऊ ता म्या पालि, संस्कृत, बरमी तथा अंग्रेजी का प्रकांड विद्वान था। उसे हिंदी की भी अच्छी जानकारी थी। उसने भारत की किसी विश्वविद्यालय से ऊंची शिक्षा प्राप्त की थी। उस समय बरमी सरकार के सांस्कृतिक विभाग का वह प्रमुख अधिकारी था। उसने कहा कि मेरा कथन सत्य नहीं है। जिस दिन मैं बुद्ध-वाणी को और अपनी परंपरा के धर्मग्रंथों को निष्पक्ष भाव से पढ़ूंगा उस दिन मुझे समझ में आ जायगा कि मेरी मान्यता कितनी गलत है। हम लोगों की मैत्री अत्यंत घनिष्ठ थी अत: इस प्रकार के मतभेदों के रहते हुए भी उसमें कोई बुरा असर नहीं आया। यद्यपि मैं अपनी मान्यता से जरा भी हटने को तैयार नहीं था।

श्रद्धेय भदंत आनन्द कौसल्यायनजी हमारे घर पर बार-बार अतिथि के रूप में ठहरा करते थे। बरमा में हिंदी प्रचार के कार्य में उनसे हमें बहुत सहायता मिली थी। इस निमित्त मैं उनका बहुत आभारी था। वैसे भी गृहस्थ धर्म निभाते हुए मैं उनके आतिथ्य में कोई कमी नहीं आने देता था। परंतु उनके द्वारा बुद्ध की शिक्षा पर कोई चर्चा शुरू होते ही मैं अन्यमनस्क हो उठता था। वे समझ जाते थे और अत्यंत व्यवहार कुशल होने के कारण अपने विनोदी स्वभाव के बल पर सरलतापूर्वक बात का रुख बदल देते थे।

एक दिन हिंदी प्रचार से संबंधित किसी विषय को लेकर घर पर चर्चा हो रही थी। मेरा बरमी मित्र ऊ ता म्या भी उपस्थित था जिसे मेरा यह कहना उचित नहीं लगा था कि बुद्ध ने अरहंत की व्याख्या गीता से लेकर की। उसने यकायक यह बात फिर उठा दी और आनन्दजी ने उसका पक्ष लेते हुए कहा कि सच्चाई वस्तुत: यह है कि गीता की रचना बुद्ध के बहुत बाद हुई। वह बुद्ध की शिक्षा से प्रभावित है। अत: उसमें बहुत बड़ी मात्रा में बुद्ध-वाणी भरी हुई है। उनके इस कथन से मुझे उस समय इतनी गहरी चोट लगी, जिसका वर्णन नहीं कर सकता। इससे भी गहरी चोट तब लगी जब उन्होंने कहा कि बौद्ध धर्म को वैदिक धर्म की संतान कहना बिल्कुल झूठ है, बल्कि सच यह है कि आज का हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म की संतान है। ऊ ता म्या ने भी स्वीकृति में सिर हिलाया। मैं चुप रहा लेकिन वे दोनों समझ गये कि मैं बहुत दु:खी हुआ हूं। मुझे लगा कि ये बौद्ध धर्म की सांप्रदायिक शिक्षा के कारण कितने भ्रमित हो गये हैं। इतनी सीधी-सी बात भी इनकी समझ में नहीं आती कि जिस गीता का उपदेश भगवान कृष्ण ने पांच हजार वर्ष पहले कुरुक्षेत्र के युद्ध में अर्जुन को दिया था वह पच्चीस सौ वर्ष पश्चात हुए बुद्ध की वाणी से कैसे प्रभावित हुआ भला! सच्चाई तो यह है कि बुद्ध ही पुरातन गीता की वाणी से प्रभावित हुए। गीता की रचना बुद्ध के पश्चात हुई, यह कथन तो सरासर झूठ है। इससे बड़ा झूठ यह है कि आज का हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म की संतान है। परंतु वह समय विवाद का नहीं था, मौन रह जाना ही उचित था।

वैसे श्रद्धेय आनन्दजी के साथ मेरे संबंध सदैव मधुर बने रहे। बुद्ध और

उनकी शिक्षा पर उनसे कभी खुल कर चर्चा नहीं होती थी। केवल एक बार ऐसा हुआ कि मैं उन्हें एयरपोर्ट छोड़ने गया। वहां जाने पर पता चला कि हवाई जहाज दो घंटे बाद छूटेगा। अत: वहीं बैठे प्रतीक्षा करते रहे। बात-बात में उन्होंने भगवान बुद्ध के जीवन के अंतिम क्षणों की चर्चा चला दी और बताया कि किस प्रकार एक मुमुक्षु उस समय उनसे मिलने और धर्म सीखने आया। भगवान के सेवक (उपस्थाक) भिक्षु आनन्द ने उसे रोका और कहा कि भगवान को विश्राम करने दो। यह उपदेश देने का समय नहीं है परंतु वह आग्रह करता रहा। महापरिनिर्वाण का समय समीप आ रहा था। भगवान के मन में असीम करुणा जागी और उन्होंने आनन्द से कहा कि इसे आने दो। यह योग्य पात्र है, धर्म सीख लेगा तो इसका कल्याण ही होगा। और उन्होंने जीवन के अंतिम क्षणों में भी कृपा करके उस मुमुक्षु को धर्म की शिक्षा दी, मुक्ति का मार्ग दिखाया। ऐसे करुणा-सागर थे भगवान बुद्ध। मैं हमेशा भावुक हृदय तो रहा ही हूं। बुद्ध के प्रति श्रद्धा भी कम नहीं थी। आनन्दजी के मुँह से उनकी यह करुण गाथा सुनते-सुनते मेरा हृदय द्रवित हो गया। आंखों से अश्रुधारा बहने लगी। भगवान की असीम करुणा के प्रति तो मन में कभी रंचमात्र भी संदेह था ही नहीं।

मेरा हृदय पिघला देख कर आनन्दजी जाते-जाते मुझे धम्मपद की एक प्रति दे गये जो मेरी टेबल पर बरसों तक पड़ी रही, लेकिन मैंने उस पुस्तक का एक पृष्ठ भी नहीं पढ़ा। बुद्ध की शिक्षा में अवश्य कहीं कुछ खोट है जो हमें गलत रास्ते ले जा सकती है। अन्यथा हमारे यहां के आदि-शंकराचार्य जैसे प्रखर विद्वान ने उसे भारत से निष्कासित क्यों किया? अब तक मैंने जो कुछ समझ रखा था उसके अनुसार बुद्ध अवश्य हमारे पूज्य हैं परंतु उनकी शिक्षा नितांत अग्रहणीय है। बचपन से लगे हुए एकतरफा लेप कितने प्रबल होते हैं!

(आत्म कथन भाग 2 से साभार) *क्रमशः ...*

ग्लोबल विपश्यना पगोडा परिचालनार्थ सेंचुरीज कॉर्पस फंड

पूज्य गुरुजी की इच्छा थी कि **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** अगले दो-ढाई हजार वर्षों तक सुचारु रूप से सक्रिय रहे, परंतु यहां आने वालों से कोई शुल्क न लिया जाय, ताकि गरीब-अमीर सभी लोग यहां आसानी से पहुँच सकें और सद्धर्म की जानकारी लेकर धर्मलाभ प्राप्त कर सकें, और इसके दैनिक खर्च को संभालने के लिए एक **'सेंचुरीज कार्पस फंड'** की व्यवस्था की जाय। उनकी इस महान इच्छा को पूर्ण करने के लिए **'ग्लोबल विपश्यना फाउंडेशन'** (GVF) के न्यासियों ने हिसाब लगाया कि यदि 8760 लोग, प्रत्येक व्यक्ति रु. 1,42,694/-, एक वर्ष के अंदर जमा कर दें, तो 125 करोड़ रु. हो जायँगे और उसके मासिक ब्याज से यह खर्च पूरा होने लगेगा। यदि कोई एक साथ नहीं जमा कर सके तो किस्तों में भी जमा कर सकते हैं। कुछ लोगों ने पैसे जमा कर दिये हैं और विश्वास है शीघ्र ही यह कार्य पूरा हो जायगा।

संतों की वाणी है कि जब तक भगवान बुद्ध की धातु रहेगी, उनका धर्म कायम रहेगा। इस माने में केवल पत्थरों से बना यह धातुगब्भ पगोडा हजारों वर्षों तक बुद्ध-धातुओं को सुरक्षित रखेगा और यहां ध्यान करने वाले असंख्य प्राणियों को धर्मलाभ मिलेगा। यानी, इसकी भारी वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु, साधक तथा असाधक सभी दानियों को सहस्राब्दियों तक अपनी धर्म-पारमी बढ़ाने का एक सुखद सुअवसर उपलब्ध है। अधिक जानकारी तथा निधि भेजने हेतु **संपर्क:--** 1. Mr. Derik Pegado, 9921227057. or 2. Sri Bipin Mehta, Mo. 9920052156, A/c. Office: 022-62427512 / 62427510; **Email--** audits@globalpagoda.org; **Bank Details:** 'Global Vipassana Foundation' (GVF), Axis Bank Ltd., Sonimur Apartments, Timber Estate, Malad (W), Mumbai - 400064, Branch - Malad (W). Bank A/c No.- 911010032397802; IFSC No.- UTIB0000062; Swift code: AXISINBB062.

पालि-हिन्दी आवासीय पाठ्यक्रम

पालि-हिन्दी ६ हफ्तों का आवासीय पाठ्यक्रम २३ फरवरी से ११ अप्रैल २०१९ तक उपरोक्त कार्यक्रमों की योग्यता जानने के लिए इस शृंखला का अनुसरण करे.

https://www.vridhamma.org/Pali-Study-Programs

संपर्क : VRI office (022) 28451204 Extn: 560, (9:30 AM to 5:30 PM only)

Ms. Rajshree K: 9004698648, Mrs. Baljit Lamba: 9833518979, Mrs. Alka Vengurlekar: 9820583440, Mrs.Archana Deshpande: 9869007040

मेडागास्कर में पहला विपश्यना शिविर

पुराने साधकों के लंबे प्रयास के बाद अफ्रीका के एक द्वीप मेडागास्कर के मध्यवर्ती क्षेत्र में अंततः 6 से 17 सितंबर, 2018 तक एक विपश्यना शिविर सफलतापूर्वक संपन्न हुआ जिसमें लगभग सभी समुदायों के 21 साधकों ने धर्मलाभ प्राप्त किया, जबकि मच्छर आदि जीव-जंतुओं की भरमार और त्योहार के शोरगुल भी बहुत थे। यह बहुत गरीब टापू है जिसमें बड़ी संख्या में भारतीय भी निवास करते हैं। अगली बार इन बातों को ध्यान में रखते हुए, बच्चों की छुट्टियों के समय लगातार दो शिविरों का आयोजन करवाने की योजना बनी है। सब का मंगल हो।

विपश्यी साधकों की धम्म-यात्रा

भारत में धम्म-आगमन की 50वीं जयंती पर विपश्यी साधकों की सुविधा के लिए पावन स्थलों की धम्म-यात्राओं का कार्यक्रम निश्चित किया गया है। पहली यात्रा 31 जनवरी, 2019 की रात में मुंबई से स्लीपर क्लास रेलगाड़ी से वाराणसी के लिए होगी। 1 से 11 फरवरी तक सभी धम्म-स्थानों जैसे सारनाथ, श्रावस्ती, कुशीनगर, कपिलवस्तु, बोधगया, राजगीर, नालंदा, पटना, वैशाली, आदि की यात्रा वातानुकूलित बस से पूरी की जायगी। बस का अंतिम पड़ाव 11 की रात गया स्टे. तक छोड़ना होगा फिर गया से मुंबई रेलगीड़ी द्वारा 13 को पहुँचेंगे। यूं एक के बाद एक यात्रायें चलती रहेंगी। यात्रा का पूरा खर्च लगभग 45 से 50 हजार के बीच आयेगा। इसी खर्च के अंतर्गत प्रत्येक स्थान पर विहारों व होटलों आदि में रात्रि-विश्राम, यात्रा-व्यय एवं भोजनादि की व्यवस्था होगी। प्रमुख स्थानों पर ध्यान, गुरुजी के प्रवचन, वंदना आदि का कार्यक्रम होता रहेगा। इच्छुक व्यक्ति अधिक जानकारी और बुकिंग के लिए **संपर्क करें फोन नं.:** 75069 43663.

पगोडा पर रात भर रोशनी का महत्त्व

पूज्य गुरुजी बार-बार कहा करते थे कि किसी **धातु-गब्भ** पगोडा पर रात भर रोशनी रहने का अपना विशेष महत्त्व है। इससे सारा वातावरण दीर्घकाल तक धर्म एवं मैत्री-तरंगों से भरपूर रहता है। तदर्थ ग्लोबल पगोडा पर रोशनी-दान के लिए प्रति रात्रि रु. 5000/- निर्धारित किये गये हैं। **संपर्क-** कृपया (GVF) के पते पर संपर्क करें। ...

धम्मालय-2 (आवास-गृह) का निर्माण कार्य

पगोडा परिसर में 'एक दिवसीय' महाशिविरों में दूर से आने वाले साधकों तथा धर्मसेवकों के लिए रात्रि-विश्राम की निःशुल्क सुविधा हेतु "धम्मालय-2" आवास-गृह का निर्माण कार्य होगा। जो भी साधक-साधिका इस पुण्यकार्य में भागीदार होना चाहें, वे कृपया उपरोक्त (GVF) के पते पर संपर्क करें।

नव निर्माणाधीन विपश्यना केंद्र, श्री गंगानगर (राजस्थान)

राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले में एक नये विपश्यना केंद्र का निर्माण प्रस्तावित है | नवनिर्मित विपश्यना ट्रस्ट के द्वारा केंद्र के लिए आवश्यक 12 बीघा जमीन (7.5 एकड़ यानी 3 हैक्टेयर) खरीद ली गयी है, जिसमें 120 साधकों की सुख-सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए निर्माण कार्य की योजना है | इसी क्रम में अभी 120 साधकों की क्षमता के अनुसार धम्म-हॉल का निर्माण सुनिश्चित किया गया है | केंद्र में जमीन की तारबंदी, पानी-संग्रहण की टंकी, गोदाम और चौकीदार के लिए कमरे का निर्माण पूरा हो चुका है | जो भी पुराने साधक इस धर्मकार्य में भाग लेना चाहें, उनके लिए अपनी पारमिताएं बढ़ाने का सुअवसर उपलब्ध है| **विपश्यना ट्रस्ट श्री गंगानगर,** पता :- गाँव- 7A छोटी, पदमपुरा रोड, श्री गंगानगर, राजस्थान **बैंक विवरण :--** HDFC Bank, A/c # 50200030108235, HDFC0000505. **संपर्क सूत्र:** 9314510116 (श्री राम प्रकाश सिंघल), 9414225425, 9413377064 (श्री बाबू लाल नारंग)

नि:शक्तजन बच्चों के लिए आनापान सति संबंधी विशेष कार्यशाला

१३ से १५ जुलाई २०१८ तक धम्मपुण्ण वि. केंद्र, पुणे पर एक विशेष कार्यशाला का आयोजन हुआ। इसमें ऐसे बच्चे, जो अलग तरह से सक्षम हैं (differently abled), को कैसे आनापान सति सिखाई जाय, इस पर विचार विमर्श हुआ। मूक-बधिर, नेत्रहीन, मानसिक अथवा शारीरिक रूप से विकलांग बच्चों की कठिनाइयों को समझा गया। मूक-बधिर बच्चों के साथ पिछले 12 वर्षों के अनुभवों का आदान-प्रदान हुआ। इन शिविरों के संचालन हेतु अलग सामग्री तैयार की गयी है। कार्यशाला में एक ICCC सदस्या, १ स.आ., १३ बा.शि.शि. एवं २२ धम्म सेवकों ने भाग लिया। इस कार्यशाला के उत्साहवर्धक परिणाम सामने आये हैं। अगले दो महीनों में देहरादून, कोल्हापुर, पुणे तथा जलगाँव में सफलता पूर्वक ऐसे शिविरों का संचालन हुआ है।

मंगल मृत्यु

वयोवृद्ध वरिष्ठ सहायक आचार्य श्री सुदर्शन ग्रोवर, जो कि धम्मगिरि के केंद्र आचार्य के सहायक भी थे, गत 3 नवंबर 2018 को बहुत शांतिपूर्वक अपने निवास, इगतपुरी में शरीर त्याग किया। वे दो महीने पूर्व बिहार में शिविर संचालन करने गये थे। वहीं पर स्वास्थ्य नरम होने पर दूसरे शिविर के संचालन के पूर्व वापस आ गये और घर पर साधना व आराम करते रहे। उन्होंने बहुत लोगों को धर्मदान दिया है। दिवंगत के प्रति धम्म परिवार की मंगल मैत्री।

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

1. श्री परशुराम वेंकटराव मोरे, नांदेड
2. श्री मिलिंद यशवंतराव आठवळे, नांदेड
3. श्री अमित भाटिया, मुंबई
4-5. श्री भाऊदास एवं श्रीमती नलिनी मेश्राम, गोंदिया
6. श्रीमती शोभा धोते, अमरावती
7. श्रीमती प्रमिला राउत, वाशिम
8. श्रीमती कविता एस. उलेमाळे, वाशिम
9. श्रीमती सुजाता खन्ना, मुंबई
10. Mr. Ri Kui Yang, China
11. Mrs. Min Rong, China

बाल-शिविर शिक्षक

1. श्री उमेश चंद पाहवा, नैनीताल, उत्तराखण्ड
2. श्री राजीव कौशिक, देहरादून
3. श्रीमती चारू गोयल, देहरादून
4. डॉ. मंजू लता सचान, देहरादून
5. श्री सुनील सिन्हा, पटना
6. श्री बासुदेव साह, मुजफ्फरपुर
7. श्री उत्तम चौधरी, मुजफ्फरपुर
8. श्रीमती मनु बाजपेयी, बोधगया
9. श्रीमती संगीता सराफ, वैशाली
10. Ms. Shih, Ling-Chi, Taiwan

"धम्म के 50 साल"

1)- श्री सुराना जी के मार्गदर्शन में एक टीम, "धम्म के 50 साल" पर पूज्य गुरुजी और पूज्य माताजी से जुड़े कथानकों पर काम कर रही है। इसमें आप जैसे लंबे समय से धम्म से जुड़े हुए लोगों से हरसंभव योगदान की आवश्यकता है। यदि आप के पास कोई महत्त्वपूर्ण वार्तालाप, विशिष्ट आख्यान-उपाख्यान, फोटो, ऑडियो, विडियो आदि हो तो कृपया अवश्य भेजें या लिखें। आवश्यकतानुसार उपयोग किया जायगा। **संपर्कः 1.** रामप्रताप यादव, विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरि, इगतपुरी-422403, जिला- नाशिक. WhatsApp no. 7977380198. Email: 50yearsofdhamma@vridhamma.org ; 2. सुश्री ज्योति देव, WhatsApp or by sending SMS no. 98209 97136.

2)-विश्व विपश्यना पगोडा में प्रतिदिन एक-दिवसीय शिविरः प्रातः 11 बजे से सायं 5 बजे तक हो रहे हैं। जिन्होंने सयाजी ऊ बा खिन की परंपरा में, गुरुजी या उनके सहायक आचार्यों द्वारा सिखायी जाने वाली विपश्यना का कम-से-कम एक 10-दिवसीय शिविर पूरा किया है, वे सभी इनमें भाग ले सकते हैं। आवश्यक और उचित व्यवस्था करने के लिए प्रतिभागियों की संख्या जानना आवश्यक है। इसलिए, कृपया पंजीकरण अवश्य करायें। **पंजीकरण** बहुत आसान है बस 8291894644 पर WhatsApp करें, या SMS द्वारा नं. 82918 94645 पर, Date लिख कर भेजें।

3. विश्व विपश्यना पगोडा पर विशेष कार्यक्रमः इस स्वर्ण जयंती पर्व पर पूज्य गुरुजी की जन्म-जयंती 30 जनवरी को दिन भर विश्व विपश्यना पगोडा में विशेष कार्यक्रम होगा। इसमें विपश्यना के सभी आचार्यगण, ट्रस्टी या धर्मसेवक, जिन्होंने भी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पूज्य गुरुजी की सहायता की हो, परंतु पहले नहीं जुड़ पाये हों, वे इसमें जुड़ने के लिए विशेष रूप से आमंत्रित हैं। धम्म-प्रसार का विडियो दर्शन, पुस्तक विमोचन और भविष्य में सदियों तक धर्म को आगे बढ़ाने संबंधी चर्चा आदि कार्यक्रम होंगे। आपका सहयोग प्रार्थनीय है।

4)- पंचायती वाड़ी, कालबादेवी (मुबई-2) में– गुरुवार 31 जनवरी को एक दिवसीय शिविरः 21 जून, 1969 को गुरुजी म्यंमा से धम्म को लेकर भारत आये, यहां विपश्यना का पहला दस दिवसीय शिविर 3 से 13 जुलाई तक पंचायती वाडी धर्मशाला में लगा, जिसमें 14 साधकों ने भाग लिया। इस ऐतिहासिक दिन और स्थान को याद करने केलिए यहां पर 31 जनवरी को एक दिवसीय शिविर लगाया जा रहा है। यहां पर अगला एक दिवसीय शिविर **3 जुलाई 2019** को भी लगेगा। **समयः** प्रातः 10 बजे से सायं 4 बजे तक। पूरा पताः पंचायती वाडी धर्मशाला, 41, दसरी पांजरापोल गली, सी.पी. टैंक, (माधवबाग मंदिर के पास) मुंबई-40004. **संपर्कः** 022-28451204, 022-62427544- Extn. no. 9, मो.- 82918 94644. (फोन बुकिंग- प्रतिदिन 11से 5 तक. Online Regn: www.oneday.globalpagoda.org

5)- ग्लोबल पगोडा में महाशिविर– रविवार 13 जनवरी को।

समयः प्रातः 11 बजे से सायं 4 बजे तक। महाशिविरों के अंत में होने वाले 3 से 4 बजे के प्रवचन में बिना साधना किये हुए लोग भी बैठ सकते हैं।

संपर्कः क्रमांक 3, 4, एवं 5 की बुकिंग के लिए कृपया उपरोक्त फोन नंबरों पर फोन करके बुकिंग अवश्य करायें अथवा निम्न लिंक पर ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन करवाएं और बड़ी मात्रा में **"समग्गानं तपो सुखो"** - सामूहिक साधना के तप-सुख का लाभ उठाएं। Online Regn: www.oneday.globalpagoda.org

2019 में ग्लोबल पगोडा में महासंघदान का आयोजन

रविवार 13 जनवरी, 2019 को पूज्य माताजी की **पुण्य-तिथि** *(5 जनवरी)* एवं सयाजी ऊ बा खिन की **पुण्य-तिथि** *(19 जनवरी)* के उपलक्ष्य में **पगोडा** परिसर में प्रातः **9:30** बजे **वृहत्संघदान** का आयोजन किया जा रहा है। उसके बाद 11 बजे से साधक-साधिकाएं **एक दिवसीय महाशिविर** का लाभ ले सकेंगे। जो भी साधक-साधिका इस पुण्यवर्धक दान-कार्य में भाग लेना चाहते हों, वे कृपया निम्न नाम-पते पर संपर्क करें-1. Mr Derik Pegado, 9921227057. or 2. Sri Bipin Mehta, Mo. 9920052156, फोनः 022- 62427512 (9:30AM to 5:30PM), Email: audits@globalpagoda.org

दोहे धर्म के

सम्यक दर्शन ज्ञान से, करें चित्त का शोध।
धर्म-बोध तब-तब जगे, जब-जब जागे क्रोध।।

पर को ही देखत रहा, रहा अज्ञ का अज्ञ।
जिसने देखा स्वयं को, वही हुआ सर्वज्ञ।।

जो निज की अनुभूति है, सम्यक दर्शन सोय।
परानुभूति अपने लिए, महज कल्पना होय।।

जैसे सूर्य प्रकाश से, तारक दल छिप जाय।
जागे सम्यक दृष्टि तो, मोह स्वयं हट जाय।।

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

साच समझ पायो नहीं, अग्यानी अणजाण।
ग्यान रचायी पोथियां? क पोथ्यां आयो ग्यान।।

ग्रंथ ग्यान गरबा गयो, हुई न सत्य प्रतीति।
भरभराय कर गिर पड़ी, बाळू री सी भींत।।

हळका होग्या बुद्धजी, पाकर साचो ग्यान।
तू भारी पत्थर जिसो, निकमो करै बखाण।।

सिद्धां पायी सिद्धियां, ग्यानी पाया ग्यान।
तूं भोळा! के पावियो, क्यां रो करै बखाण?।

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6,
अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877
मोबा.09423187301, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकाफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2562, मार्गशीर्ष पूर्णिमा, 22 दिसंबर, 2018

वार्षिक शुल्क रु. 30/-, US $ 10, आजीवन शुल्क रु. 500/-, US $ 100. "विपश्यना" रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2018-2020

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

DATE OF PRINTING: 5 DECEMBER, 2018, DATE OF PUBLICATION: 22 DECEMBER, 2018

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086,
244144, 244440.
Email: vri_admin@vridhamma.org
course booking: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org